डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part — I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper — I

Date:- 19-02-2022

Page No.
Date

कबीरदास के भक्ति-पद (भाग-5)

भक्ति गेंद चौगान की,
भावै कोई लै लाय।
कहैं कबीर कुछ भेद नहिं,
कहाँ रंक कहँ राय॥

भावार्थ :-

भक्ति तो मैदान में गेंद के समान सार्वजनिक है। अर्थात् भक्ति उस गेंद के समान हैं जिसे जीव अपनी इच्छा से किसी भी तरफ ले जा सकता है। राजा या प्रजा किसी को इसकी चाह होती है वह वह इसे अपने हाथ में ले सकता है। इस प्रकार कबीरदास ने सिद्ध किया है कि भक्ति में बड़े और छोटे किसी का भेदभाव नहीं है। सभी का इस पर बराबर अधिकार है।

जब लगि भक्ति सकाम है,
तब लगि निस्फल सेव।
कह कबीर वह क्यों मिलै
निःकामी निज देव॥

भावार्थ:

कबीरदास कहते हैं कि जब तक विषय

Scanned by CamScanner

वासनाओं में आसक्ति रहती है अर्थात् जीव संसार में रमा हुआ है तब तक परम ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसी भक्ति साधना उसे निष्काम प्रभु से मिलने में निष्फल कर देती है।

Scanned by CamScanner